जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी

अमरीकी राष्ट्रपति

जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी

जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी की कहानी एक परिवार के नौ बच्चों में से दूसरे बच्चे की कहानी है. जीवन के आरंभ में ही अपने बहन-भाइयों के साथ खेलते-खेलते उन्होंने टीम वर्क का महत्व सीखा और समझा.

जब तक वह जीवित रहे उन्होंने हर कार्य को बड़ी मेहनत से उत्तम ढंग से पूरा किया, क्योंकि उन्हें शिक्षा मिली थी कि अगर कोई कार्य करने योग्य था तो वह उत्तम ढंग से ही करने योग्य था.

यह कहानी उस युवा और हंसमुख व्यक्ति की है जिसे संसार में जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी, यूनाइटेड स्टेट्स के पैंतीसवें प्रेसिडेंट के रूप में याद करेगा.

जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी

अमरीकी राष्ट्रपति

25 नवम्बर 1963

छह भूरे रंग के घोड़े झंडे में लिपटे एक ताबूत को रास्ते से खींच कर छोटी पहाड़ी की ओर ले जा रहे थे. मंद आवाज़ में ढोल बजाये जा रह थे.

जिस तोप-गाड़ी पर ताबूत रखा था उसके पीछे एक सैनिक प्रेसिडेंट का झंडा लिए मार्च कर रहा था. एक सैनिक बिना-सवार के एक काले घोड़े की लगाम पकड़े चल रहा था. उस घोड़े की रकाब में खाली जूते उलटे रखे हुए थे. यह इस बात का सूचक था कि एक योद्धा की निधन हुआ था.

एक महान व्यक्ति, जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी, के सम्मान में कई देशों से आये लोग तोप-गाड़ी के पीछे आ रहे थे.

जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी का जन्म 1917 में हुआ था. वह अपने परिवार की दूसरी सन्तान थे.

जोसफ प्रथम सन्तान थे, फिर जॉन का जन्म हुआ था. जॉन के बाद रोजमेरी और कैथलीन थे. उनके बाद यूनिस और पैटरिशया थे. फिर जीन और रोबर्ट थे.

जब सब भाई-बहन एक कतार में खड़े हो जाते तो वह सब आठ पायदान की एक सीढ़ी जैसे लगते थे. बाद में, सबसे छोटे भाई एडवर्ड का जन्म हुआ तो वह नौ हो गये.

उनका परिवार एक घनिष्ठ परिवार था. बड़े भाई छोटे भाई-बहनों का ध्यान रखते थे और सब मिलकर तरह-तरह के खेल खेलते थे.

बड़े बच्चे टच फुटबाल या टेनिस खेलते थे. वह अच्छे तैराक भी थे. कई बार आपस में तैरने का मुकाबला भी करते थे.

'अगर कोई कार्य करने योग्य है तो वह उत्तम ढंग से ही करने योग्य है,' उनके पिता अक्सर कहा करते थे.

आमतौर पर गर्मियों के दिन वह मेसाचुसेट्स में केप कॉड पर स्थित ह्यान्निस पोर्ट में बिताया करते थे. वह समुद्र में तैरते और नाव चलाते. इस कारण उन्हें समुद्र से लगाव हो गया.

इसी समय द्वितीय विश्व युद्ध की आंच महासागर पार कर यूनाइटेड स्टेट्स तक पहुँच गई.

जॉन कैनेडी नौसेना में भर्ती हो गये. पट्रोल टारपीडो (पी टी) नाव के विषय में जानकारी पाने के लिये वह नेवी के एक स्कूल गये. पी टी नाव एक पतली, लंबी नाव होती थी. यह नाव तेज़ गति से चलने और युद्ध करने के लिये बनी थी.

स्कूल में शिक्षा पूरी करने के बाद जॉन कैनेडी अध्यापन के लिए हार्वर्ड यूनिवर्सिटी गये.

हार्वर्ड से स्नातक की डिग्री पाने के बाद वह कुछ समय के लिए स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी भी गये.

नाव लड़ाई में भाग ले चुकी थी और बहुत ही गंदी थी.

बड़े-बड़े चूहे नाव के डेक पर दौड़ रहे थे और छोटी काली छिपकलियाँ नाव के अगले भाग पर चढ़ी हुई थीं. नाव के इंजन भी खराब थे और मरम्मत की आवश्यकता थी.

लेफ्टिनेंट बनने के बाद जॉन कैनेडी को दक्षिणी प्रशांत महासागर के द्वीपों की ओर भेजा गया. वहां वह एक पी टी नाव के प्रभारी थे. सब उन्हें 'स्किपर जॉन कैनेडी' कह कर बुलाते थे.

उन्होंने और उनके नाविकों ने अपनी नाव, पी टी 109, देखी.
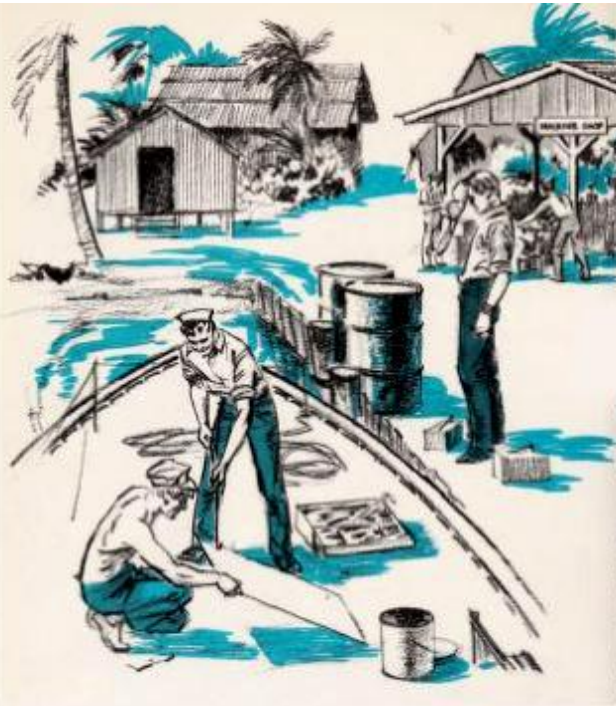
अब दिन के समय पी टी 109 एक पुराने लकड़ी के बने घाट के निकट खड़ी रहती. रात होते ही सब लड़ाई के लिए तैयार हो जाते.

स्किपर और उसके नाविक काम में जुट गये और जल्दी ही पी टी 109 लड़ाई में भाग लेने के लिये तैयार हो गयी. उसके टारपीडो किसी भी जहाज़ को डुबो सकते थे.

स्किपर जॉन कैनेडी नाव की कमान संभालते और धीरे से उसे डॉक (Dock) से बाहर ले आते. सारी रात ध्यान से उनके नाविक शत्रु जहाज़ों की आवाज़ सुनने का प्रयास करते.

कई रातें वह शत्रु जहाज़ों की खोज में सागर में गये और सुबह, यह देखने के लिए कि पहले कौन वापस पहुंचेगा, सब पी टी नावें तेज़ी से डॉक की ओर लौटतीं.

पी टी 109 के स्किपर सदा गर्जन करते हुए आते थे और अंतिम पल ही नाव को रोकते थे. अधिकांश समय वह सबसे पहले पहुँचते थे.

एक सुबह वह तेज़ी से आये और लेकिन समय पर नाव को रोक न सके. ज़ोरदार धमाके के साथ उनकी नाव घाट से टकरा गई और घाट का एक हिस्सा टूट गया.

एक पल को तो लोगों ने समझा कि शत्रु ने द्वीप पर बम मारे थे.

उस दिन से उनके साथी उन्हें 'क्रेश कैनेडी' बुलाने लगे.

इस दुर्घटना के बाद पी टी 109 के तीन इंजनों की मरम्मत करनी पड़ी. इंजन ठीक करने के बाद जॉन कैनेडी और उनके नाविक रेंडोवा द्वीप चले गये.

वहां दक्षिण प्रशांत महासागर के नीले पानी में अन्य पी टी नावें भी थीं.

रात दर रात स्किपर जॉन कैनेडी और उनके नाविक सागर में गश्त लगाते. छोटे और बड़े द्वीपों के पास से गुज़रते. इन में से कुछ द्वीप शत्रु के कब्ज़े में थे.

जहाज़ों की आवाज़ सुनने का प्रयास करते हुए वह आगे बढ़ते जाते थे. कई बार रात में अमेरिकी हवाई जहाज़ शत्रु द्वीपों पर बम गिराते तो उनकी चमक उन्हें दिखाई देती थी.

कई बार पी टी नावें शत्रु पर गोले दागती थीं.

पी टी 109 धीरे-धीरे काली लहरों पर आगे बढ़ने लगी. हर नाविक सुनने का प्रयास कर रहा था -

इंजन की गड़गड़ाहट सुनाई दी.

आवाज़ बढ़ती गयी-

शरद ऋतु के आरंभ में एक रात चार शत्रु जहाज़ द्वीपों के पास देखे गये,

पी टी नावें अँधेरा होने की प्रतीक्षा करने लगीं. उस रात वह उन जहाज़ों का पीछा करने वाली थीं.

लेफ्टिनेंट कैनेडी पानी में गिर गये.

पी टी 109 नाव का आधा भाग डूब गया था. लेफ्टिनेंट ने चिल्ला कर अपने नाविकों को बुलाया. उनके साथियों ने पानी में तैरते हुए उत्तर दिया.
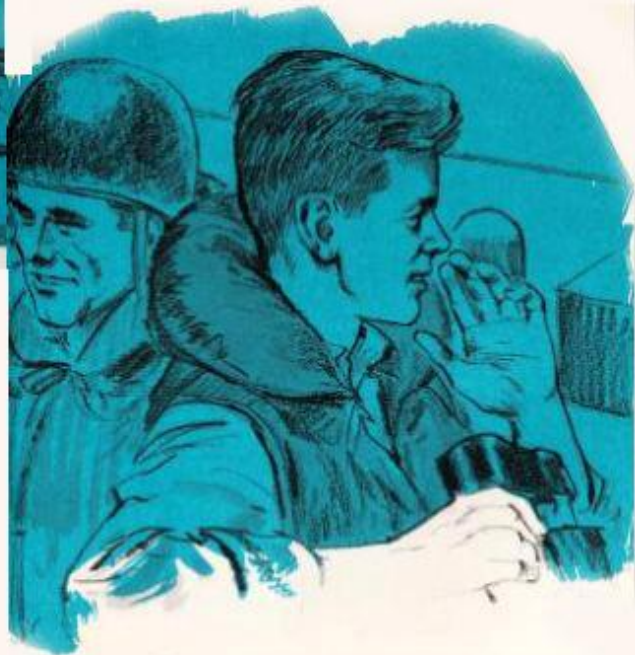
रात के अँधेरे में शत्रु का जहाज़ एक काले दैत्य के समान आगे आया. वह सीधा उनकी ओर आया-

एक धमाके के साथ पी टी 109 नाव दो टुकड़ों में कट गई .
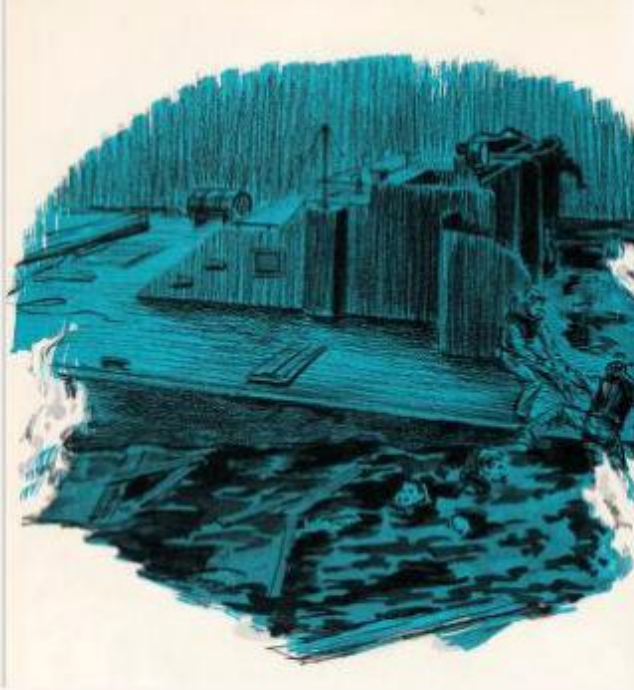
वह सब पी टी 109 नाव के तैरते हुए आधे भाग पर चढ़ गये. लेफ्टिनेंट ने अपने साथियों की गिनती की.

दो को छोड़ बाकि सब वहां थे. ग्यारह जीवित बच गये थे.

आखिरकार सुबह हुई.

अब तक यह नाविक समझ गये थे कि अन्य पी टी नावें रेंडोवा द्वीप वापस लौट गयी होंगी और पी टी 109 की कमी पता लग गयी होगी.

लेफ्टिनेंट कैनेडी और उनके साथी प्रतीक्षा करने लगे. लेकिन कोई सहायता करने न आया.

वह समझ गये कि उन्हें अपनी मदद स्वयं करनी होगी.

दूर कई द्वीप दिखाई दे रहे थे और वह जानते थे कि इन में से कुछ द्वीप शत्रु के कब्ज़े में थे.

दक्षिण की ओर पल्म पुडिंग द्वीप था, जो गोल और हरा-भरा था. यह द्वीप इतना छोटा था कि शायद शत्रु को यहाँ छिपने की जगह न मिली हो.

लेफ्टिनेंट ने निश्चय किया कि वह और उनके साथी तैर कर उस द्वीप पर चले जायेंगे और सहायता मिलने तक वहां के जंगल में छिप कर रहेंगे.

एक नाविक घायल था और तैर न सकता था.

उस नाविक की लाइफ जैकेट की पट्टी को दांतों से पकड़ कर लेफ्टिनेंट कैनेडी तैरने लगे और उस आदमी को अपने साथ खींच कर आगे बढ़ते गये. कई घंटों तक वह तैरते रहे. बीच-बीच में रूककर पानी में बहते हुए ही आराम भी करते और फिर तैरने लगते.

द्वीप पर पहुँच कर वह रेंगते हुए पानी से बाहर आये और सफ़ेद रेत पर लेट गये.

उन्होंने थोड़े समय ही विश्राम किया था कि उन्हें किसी नाव की आवाज़ सुनाई दी.

वह नहीं जानते थे कि उस नाव में उनके मित्र थे या शत्रु. वह रेंग कर झाड़ियों के निकट आये और ध्यान से देखने लगे.

एक शत्रु नाव धीरे-धीरे द्वीप के आसपास चल रही थी.

सहायता प्राप्त करने के विचार से लेफ्टिनेंट कैनेडी तैर कर दूसरे द्वीपों पर गये. अंततः कई रात एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक तैरने के बाद उन्हें एक द्वीप पर कुछ स्थानीय लोग मिले जो उन्हें एक मित्र गश्ती दल के पास ले गये.

उस गश्ती दल के लोग तुरंत एक नाव लेकर उनके साथियों के पास पहुंचे और उन नाविकों को वहां से निकाल लाये. फिर पी टी 109 के ग्यारह सदस्यों को साथ ले वह नाव रेंडोवा द्वीप की ओर तेज़ी से चल पड़ी.

पीठ में चोट लगने के कारण लेफ्टिनेंट कैनेडी को इलाज के लिये अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें कई सप्ताह रहना पड़ा.

आखिरकार युद्ध समाप्त हुआ.

अब यूनाइटेड स्टेट्स में जॉन कैनेडी अन्य रूप से देश की सेवा करना चाहते थे. वह कांग्रेस के सदस्य बनना चाहते थे.

उनका विश्वास था कि अगर वह खूब मेहनत करेंगे तो मेसाचुसेट्स राज्य से वह कांग्रेस के लिये चुनाव जीत सकते थे.

जॉन कैनेडी ने खूब मेहनत की. राज्य के अलग-अलग भागों में जाकर वह लोगों से मिले.

उनके परिवार ने भी उनकी सहायता की. उनके भाइयों और बहनों ने अपने भाई जॉन कैनेडी के विषय में लोगों से बात की.

उनके माता-पिता ने अपने बेटे जॉन कैनेडी के विषय में बताया.

अन्य लोगों ने बात की. उन्होंने अपने मित्र जॉन कैनेडी के बारे में बात की.

जब वोटों की गिनती हुई तो वह चुनाव जीत गये थे. वह कांग्रेस के सदस्य बन गये थे.

कांग्रेसमैन जॉन ऍफ़ कैनेडी लोकप्रिय थे और लोग उन्हें पसंद करते थे. कई लोग चाहते थे कि वह सेनेट का चुनाव लड़ें. कुछ समय बाद उन्होंने ऐसा करने का निर्णय लिया.

अगर कोई कार्य करने योग्य था तो वह उत्तम ढंग से ही करने योग्य था. इसलिये इस अभियान में जितनी मेहनत जॉन ऍफ़. कैनेडी कर सकते थे उतनी मेहनत उन्होंने की. उन्होंने दुबारा अपने राज्य के मतदाताओं से सम्पर्क बनाया और उनसे बात की.

उन्होंने लोगों को आश्वासन दिया कि सेनेट में वह लोगों की भलाई के लिए कार्य करेंगे. और जिन्होंने भी उनकी बात सुनी उन लोगों को विश्वास हो गया कि वह अपना दायित्व अच्छे से निभायेंगे.

वह फिर चुनाव जीत गये.

अब वह सैनेटर जॉन ऍफ़ कैनेडी बन गये.

उनका विवाहित जीवन सुखी था हालंकि बीच में उन्हें फिर से अस्पताल में भर्ती होना पड़ा था.

एक शाम एक डिनर पार्टी में एक युवती, जैकलिन बूविए, सैनेटर कैनेडी के सामने बैठी थी.

उस युवती की सुंदरता और उसके शांत, शर्मीले स्वभाव ने उन्हें आकर्षित किया. वह दोनों अकसर मिलने लगे और थोड़े समय बाद ही उन्होंने विवाह कर लिया.

कई सप्ताह बाद जब वह स्वस्थ हो गये वह घर लौट आये और सेनेट में अपना काम करने लगे.

फिर 1960 में एक और पद का चुनाव लड़ने के लिये सैनेटर कैनेडी को मनोनीत किया गया. वह रिचर्ड निक्सन के विरुद्ध यूनाइटेड स्टेट्स के प्रेसिडेंट के पद के लिए चुनाव लड़ने वाले थे.

सैनेटर कैनेडी ने हर जगह लोगों से संवाद किया. उन्होंने छोटे नगरों में लोगों से बात की और महानगरों में भी बात की. वह टेलीविज़न के द्वारा लोगों के घरों तक पहुंचे.

अंत में जब मतों की गिनती हुई तो जॉन ऍफ़ कैनेडी चुनाव जीत गये.
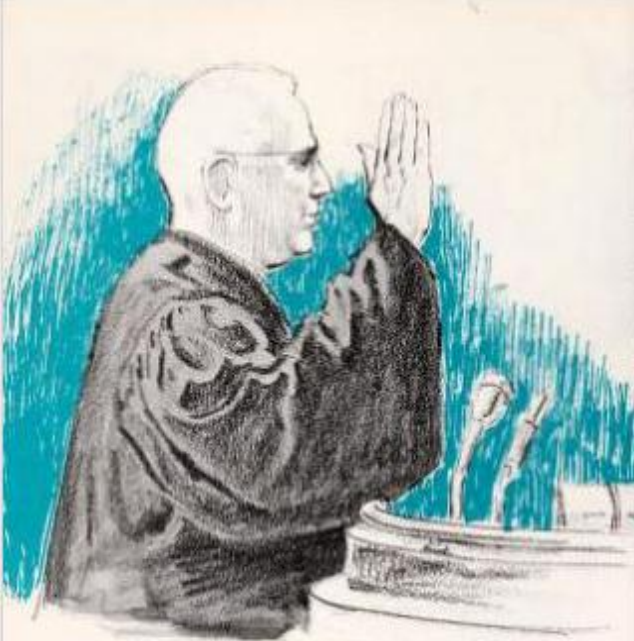
बीस जनवरी 1961 को कैपिटल के सामने बने एक चबूतरे खड़े हो कर जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी ने अपना दायाँ हाथ उठाया और प्रेसिडेंट के पद की शपथ ली और वचन दिया कि वह यूनाइटेड स्टेट्स के संविधान की रक्षा करेंगे.

शपथ समारोह के पश्चात नये प्रेसिडेंट के सम्मान में एक परेड आयोजित हुई. वाइट हाउस में बने एक स्टैंड से प्रेसिडेंट और उनकी पत्नी ने परेड को देखा.
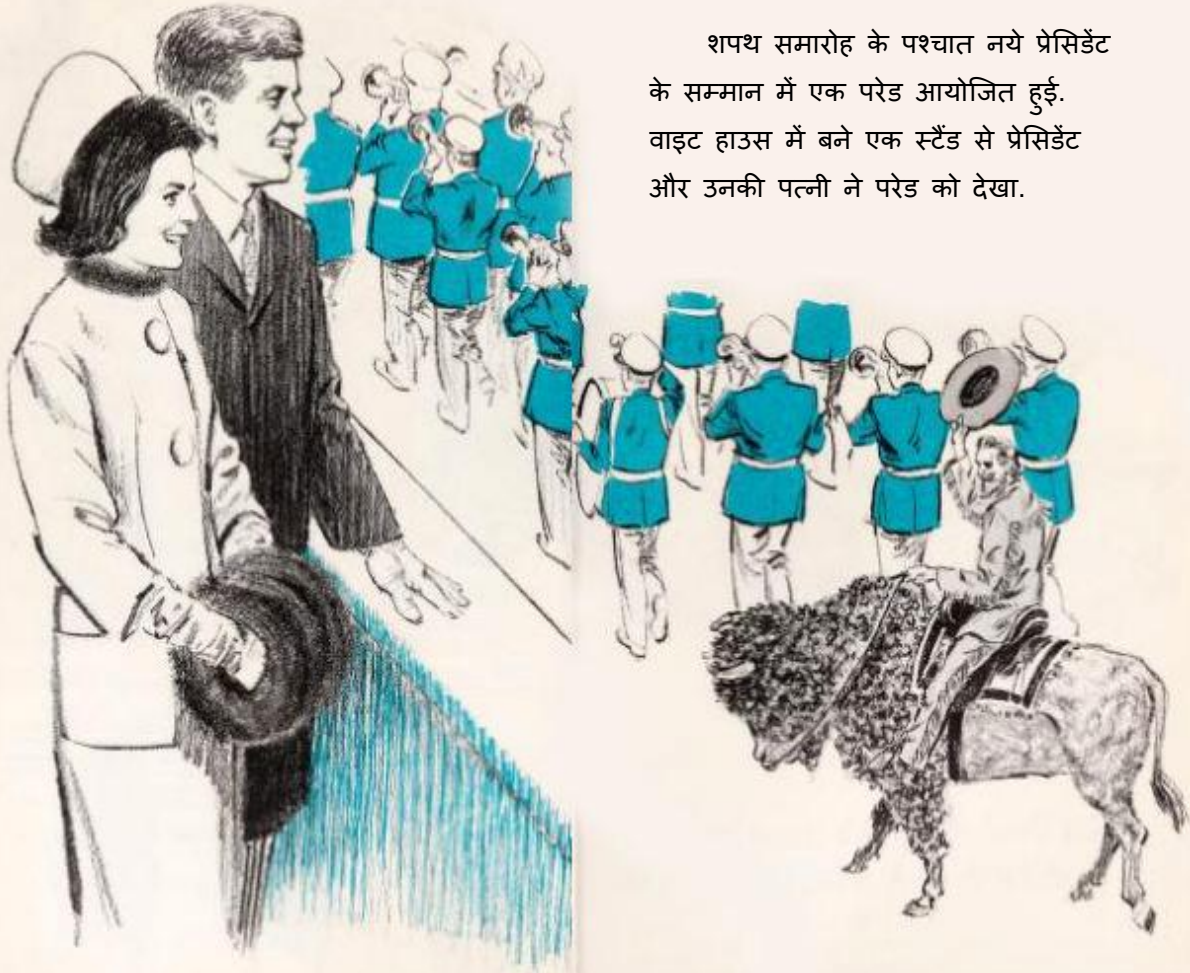
हवा तेज़ चल रही थी और बर्फ भी गिर रही थी. तभी एक झांकी आई.
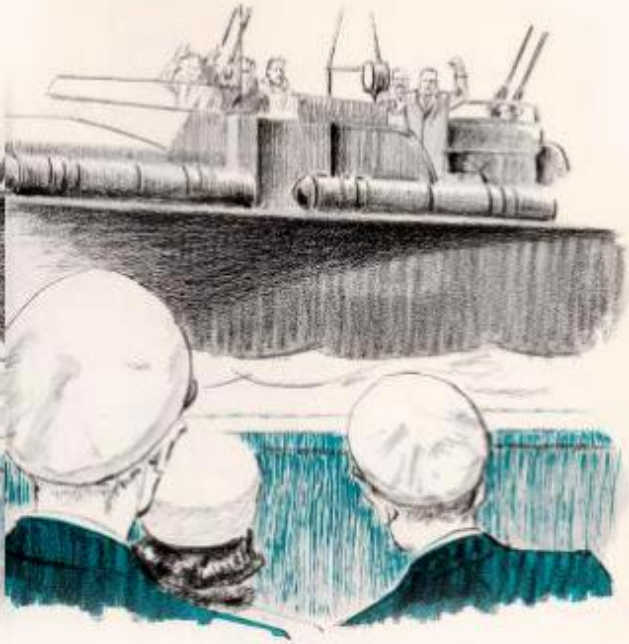
इसमें एक पट्रोल टारपीडो नाव थी और साथ में थे पुरानी नाव 109 के नाविक.

शीघ्र ही प्रेसिडेंट अपनी पत्नी और दो बच्चों, कैरोलिन और जॉन, जूनियर के साथ वाइट हाउस में रहने के लिये आ गये.

प्रेसिडेंट और उनकी पत्नी ने कई देशों की यात्रा की. जहां भी वह गये, उनका स्वागत करने के लिए लोग सड़कों पर खड़े उनकी प्रतीक्षा करते थे.

उन्होंने अमरीका में भी कई यात्राएँ कीं.

अंत में वह एक रास्ते पर कार में जा रहे थे. सड़क के दोनों और खड़े लोग उनका अभिवादन कर रहे थे.

उनकी पत्नी ने हाथ में गुलाब के फूलों का गुच्छा पकड़ रखा था. सुहावना दिन था और लोग प्रसन्न थे.

तभी तीन गोलियों की आवाज़ सुनाई दी.

एक हत्यारे की गोलियां प्रेसिडेंट को लगीं थीं और आधे घंटे बाद उनका निधन हो गया था.

अब, उस छोटी पहाड़ी की ढलान पर सात भूरे घोड़े रुक गए चुपचाप प्रतीक्षा करने लगे.

जिस व्यक्ति का निधन हुआ था उसके सम्मान में बिगुल बजाए गये और तोपें चलायीं गयीं.

यूनाइटेड स्टेट्स के प्रेसिडेंट जॉन फिट्ज़गेराल्ड कैनेडी एक भले और बहादुर, हंसमुख व प्रसन्नचित्त व्यक्ति थे. उनके आकस्मिक निधन पर एक राष्ट्र ने और विश्व ने शोक मनाया.

समाप्त